कह लंकेस सुनहु रघुनायक। कोटि सिंधु सोषक तव सायक ।।
जद्यपि तदपि असि गाई। बिनय करिअ सागर सन जाई ।।
दो०-प्रभु तुम्हार कुलगुर जलधि कहिहि उपाय बिचारि।
बिनु प्रयास सागर तरिहि सकल भालु कपि धारि।। **50** ।।
सखा कही तुम्ह नीति उपाई। करिअ दैव जौं होइ सहाई ।।
मंत्र न यह लछिमन मन भावा। राम बचन सुनि अति दुख पावा ।।
नाथ दैव कर कवन भरोसा। सोषिअ सिंधु करिअ मन रोसा ।।
कादर मन कहुँ एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा ।।
सुनत बिहसि बोले रघुबीरा। ऐसेहिं करब धरहु मन धीरा ।।
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिंधु समीप गए रघुराई ।।
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरू नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ।।
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए। पाछें रावन दूत पठाए ।।
दो०-सकल चरित तिन्ह देखे धरें कपट कपि देह।
प्रभु गुन हृदयँ सराहहिं सरनागत पर नेह।। **51** ।।
प्रगट बखानहिं राम सुभाऊ। अति सप्रेम गा बिसरि दुराऊ ।।
रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने। सकल बाँधि कपीस पहिं आने ।।
कह सुग्रीव सुनहु सब बानर। अंग भंग करि पठवहु निसिचर ।।
सुनि सुग्रीव बचन कपि धाए। बाँधि कटक चहु पास फिराए ।।
बहु प्रकार मारन कपि लागे। दीन पुकारत तदपि न त्यागे ।।
जो हमार हर नासा काना। तेहि कोसलाधीश कै आना ।।
सुनि लछिमन सब निकट बोलाए। दया लागि हँससि तुरत छोड़ाए ।।
रावन कर दीजहु यह पाती। लछिमन बचन बाचु कुलघाती ।।
दो०-कहेहु मुखागर मूढ़ सन मम संदेसु उदार।
सीता देइ मिलहु न त आवा कल तुम्हार।। **52** ।।
तुरत नाइ लछिमन पद माथा। चले दूत बरनत गुन गाथा ।।
कहत राम जसु लंका आए। रावन चरन सीस तिन्ह नाए ।।
बिहसि दसानन पूँछी बाता। कहसि न सुक आपनि कुसलाता ।।
पुनि कहु खबरि बिभीषन केरी। जाहि मृत्यु आई अति नेरी ।।
करत राज लंका सठ त्यागी। होइहि जव कर कीट अभागी ।।
पुनि कहु भालु कीस कटकाई। कठिन काल प्रेरित चलि आई ।।
जिन्ह के जीवन कर रखवारा। भयउ मृदुल चित सिंधु बिचारा ।।
कहु तपसिन्ह कै बात बहोरी। जिन्ह के हृदयँ त्रास अति मोरी ।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान